Your Roll No. : .....

Sl. No. of Question Paper : 3084

Unique Paper Code :62051204

Name of the Course :B.A.(Programme)

Hindi CBCS

Name of the Paper : Hindi- C

Semester : II

Time : 3 Hours| Maximum Marks : 75

छात्रों के लिए निर्देश :

(1) इस प्रश्न-पत्र के प्राप्त होने पर तुरंत शीर्ष पर अपना रोल नंबर लिखें।

(2) सभी प्रश्न अनिवार्य है।

1. सप्रसंग व्याख्या कीजिए 10X3=30

क) पाहन पूजे हरि मिले तो मैं पूजूं पहार।

ताते यह चाकी भली पीस खाए संसार।।

अथवा

उधो, मन न भए दस बीस

एक हुतो सो गयौ स्याम संग, को अपराधै ईस

इंद्रि सिथिल भई केसव बिनु, ज्यौं देही बिनु सीस

आसा लागि रहति तन स्वासा, जीवहिं कोटि बरीस

तुम तो सखा स्याम सुंदर के, सकल जोग के ईस

सूर हमारै नंद-नंदन बिन, और नहीं जगदीस।।

ख) थौरे ही गुन रीझते, बिसराई वह बानि।

तुमहू, कान्ह, मनौ भए आजकाल्हि के दानि।।

अथवा

रावरे रूप की रीति अनूप, नयौ नयौ लागत जैतौ निहारियै

त्यौं इन आंखिन बानि अनौखी, अघानि कहूं नहिं आन तिहारियैं

एक ही जीव हुतौ सुतौ वारयौ, सुजान संकोच औ सोच सहारियै

रोकी रहै न, दहै घन आनंद, बाबरी रीझ के हाथनि हारियै।

ग) नर हो न निराश करो मन को

कुछ काम करो, कुछ काम करो

जग में रह कर कुछ नाम करो

यह जन्म हुआ किस अर्थ अहो

समझो जिसमें यह व्यर्थ न हो

कुछ तो उपयुक्त करो तन को।

अथवा

यह धरती कितना देती है! धरती माता

कितना देती है अपने प्यारे पुत्रों को !

नहीं समझ पाया था मैं उसके महत्व को!

बचपन में, छि: स्वार्थ लोग बस पैसे बोकर !

रत्नप्रसविनी है वसुधा अब समझ सका हूं।

2) कबीर की काव्यभाषा पर प्रकाश डालिए। (10) ~~अथवा~~

अथवा

सूरदास वात्सल्य रस के कवि हैं, स्पष्ट कीजिए।

3) बिहारी की भक्ति भावना को स्पष्ट कीजिए। (10) ~~अथवा~~

अथवा

घनानंद की प्रेम व्यंजना पर प्रकाश डालिए।

4) 'नर हो न निराश करो मन को' कविता का प्रतिपाद्य लिखिए। (10)

अथवा

' सुमित्रानंदन पंत प्रकृति के सुकुमार कवि है ' इस कथन की समीक्षा कीजिए।

5) किन्ही तीन पर टिप्पणी लिखिए (5X3=15)

क) संतकाव्य।

ख) रीतिमुक्त कविता।

ग) पश्चिमी हिंदी।

घ) राजस्थानी हिंदी।

ङ) ~~भक्ति काव्य।~~ सगुण भक्ति काव्य